

संपादकीय पृष्ठ



जीवन एक प्रवाह है, जो नित गतिमान है। समय का पहिया हमेशा चलता रहता है और हमारे जीवन को गति देता रहता है। जीवन पथ पर आगे बढ़ना ही हमारा सच्चा कार्य है। जीवन में रुक जाना मृत्यु समान होता है। मृत्यु केवल वह नहीं होती जब हमारे प्राण पखेरू उड़ जाए बल्कि जिस समय हम अपने कर्तव्य पथ से भटक जाएं जब हमारे से भर जाए और दरिद्र बन जाए ऐसा व्यक्ति भी मृत समान होता है।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमेशा सीखना जरूरी होता है। जिस समय कोई भी व्यक्ति सीखना छोड़ देता है, तो वह जिंदा तो होता है, लेकिन उसके अंदर जिंदगी नहीं होती है।

जीवन बहुत उतार-चढ़ाव भरा होता है और सच्चा मनुष्य वही है, जो कर्तव्य पथ पर डटा रहे। जीवन में यह महत्वपूर्ण नहीं होता कि आप कितने सफल हैं, लेकिन यह बात मायने जरूर रखती है कि आप सफलता प्राप्त करने के लिए कितने प्रयासरत हैं। प्रतिदिन सफल होने का प्रयास वही करता है, जिसमें आगे बढ़ने की, मेहनत करने की हिम्मत होती है। जीवन में आप कोई भी कार्य तभी कर सकते हैं, जब आप में उस कार्य को करने की ललक हो।

कहा भी जाता है -

सपने पूरे उसी की होते हैं जिनके सपनों में जान होती है।

पंख होने से कुछ नहीं होता हौसलों में उड़ान होती है।।

**बिमला देवी
हिंदी अध्यापिका**

हमारे विद्यालय में हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन 8 अगस्त 2022 को किया गया। कक्षा आठवीं नवीं 0 दसवीं के प्रत्येक श्रेणी के छात्रों ने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। विजेताओं के नाम व उनके विचार इस प्रकार से हैं -

आठवीं क के बच्चों के विचार

परिवार में माँ की भूमिका



हमें बोलना नहीं आता था

तो OG समझ जाती थी

आज हमारे बात पर कहते हैं

हे माँ तू नहीं समझेगी

माँ ममता और वात्सल्य की मूरत है। एक बच्चे की सबसे पहली दुनिया माँ का आंचल ही होता है। उसी की गोद में बैठ कर वे दुनिया के नए रंग nsखता है। माँ ही पहला गुरुकुल और पहला गुरु होती है। माँ के जितना समर्पण और त्याग और कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता है। माँ ने जन्म से पहले ही हमारा ख्याल रखना शुरू कर देती है। हमारे जन्म के समय उसे असहनीय पीड़ा का सामना करना पड़ता है। फिर भी वह हमारी एक मुस्कान देखने के लिए सारी पीड़ा को खुशी खुशी सह जाती है।

गम की चोटें, फौलाद से ज्यादा क्या होगा माँ की दौलत, दुनिया में औलाद से ज्यादा क्या होगा

माँ का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है क्योंकि उसके बिना हमारा जीवन संभव नहीं हो पाता। वही हमें इस दुनिया में लेकर आती है। बचपन में वह हमारा पालन-पोषण करती है। हमारी हर नादानी को नजरअंदाज करके हमें माफ कर देती है। **माँ और क्षमा दोनों एक है क्योंकि माफ करने में दोनों नेक है।** संसार में पुरुषों को सबसे ज्यादा शक्तिशाली बताया जाता है, लेकिन सबसे शक्तिशाली तो माँ है, जिसके साहस ने निडरता बुद्धिमता दयालुता और प्रेम भाव के आगे कोई भी नहीं टिक पाता है।

अनवेषा नेगी आठवीं अ



हर एक के जीवन में माँ ही एक ऐसी होती है। जो हमारे दिल में किसी और की जगह नहीं ले सकती। वह प्रकृति की तरह है जो हमेशा देने के लिए जानी जाती है। बदले में बिना कुछ भी हमसे वापस लिए। हम अपने जीवन में पहले पल से माँ को देखते हैं। जब इस दुनिया में हम आंखें खोलते हैं, जब हम बोलना शुरू करते हैं, तो हमारा पहला शब्द होता है माँ। इस धरती पर वह हमारी पहली प्यार, पहला शिक्षक और सबसे पहला दोस्त होती है। माँ तो जगत जननी है, जन्म से पूर्व तथा जन्म के बाद शिशु पूरी तरह से माँ पर निर्भर रहता है। उसे अपना दूध पिलाकर बड़ा करने के बाद, बोलना, चलना व संसार के बारे में सारा ज्ञान माँ के मार्गदर्शन से ही प्राप्त होता है। माँ का दिल सागर से भी बड़ा होता है। माँ की ममता आसमान से भी बढ़कर होती है। माँ संतान का जीवन सुखी हो इसलिए समस्त कष्टों को सह लेती है।

खुदा का दूसरा रूप है माँ ममता की गहरी झील है माँ वह घर किसी जन्नत से कम नहीं जहाँ खुदा की तरह पूजी जाती है माँ

माँ के साहस और सहनशीलता की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। हिंदू धर्म ग्रंथों में यह बात सही कही गई है कि मां देवताओं की तरह पूजा होती है। हमारे परिवार के संकटों के पालनहार माँ ही सच्चे सम्मान की हकदार है। प्रत्येक के जीवन में उनका बड़ा महत्व है। हमें इस बात का एहसास हर वक्त होना चाहिए। माँ बाप की सेवा हर पल करनी चाहिए।

असमी चौधरी आठवीं क



मेरी जिंदगी में माँ का योगदान मेरे सुबह उठने से रात के सोने तक निरंतर चलता रहता है। माँ परिवार का सबसे कीमती हिस्सा होती है। एक बच्चे की परवाह उसकी माँ से ज्यादा कोई नहीं कर सकता। हमारे जीवन में माँ सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माँ हमारी जननी होती है। वह हमें जन्म देती है और वह हमारे जीवन भर देखभाल करती है। एक शिशु का पहला शब्द भी माँ होता है। बच्चे के पहले कदम चलते समय गिर जाने पर भी उसकी माँ ही उसे उठाती है। माँ के काफी पर्यायवाची हैं अंबा, जननी, मातृ, माता, अम्मा गिर जाने पर भी जीभ पर बस एक ही शब्द आता है मम्मी। माँ हमारा पहला पहला प्रभु, पहला पहला मार्गदर्शक होती है। परिवार के रिश्ते की डोर पकड़े भी वही खड़ी रहती है। गुस्सा हो जाने पर भी वही खाना खाने बुलाती है। एक बालक चाहे कितना भी बुरा हो पर माँ कभी भी बुरी नहीं हो सकती। सब के चले जाने पर भी वे हमेशा सहारा बनी रहती है। वह हमारा भला सोचती हैं और दयालु होते हुए हमें पालती है।

बिना बोले भी हमें समझने वाली और दुनिया में सबसे नेक होने वाली एक माँ ही है। माँ का महत्व तब तक पता नहीं चलता। जब तक वह चली जाती है। एक माँ दुनिया की किसी भी इंसान की जगह ले सकती हैं। परंतु दुनिया का कोई भी इंसान एक माँ की जगह नहीं ले सकता। माँ जीवन का सबसे अनोखा खजाना होती है।

आशवी शर्मा आठवीं क



**मुझ को छांव में रखा खुद जलती रही धूप में
मैंने देखा है एक फरिश्ता मां के रूप में**

दोस्तों कहते हैं कि मां भगवान का रूप होती है क्योंकि इस विश्व की रचना भगवान ने की है और धरती पर एक परिवार की रचना एक माने की है। माँ उस जल के समान है जो निरंतर बहता रहता है। माँ उस अचल पहाड़ की तरह है जब मुसीबत आती है तो मैं उस पहाड़ की तरह मजबूती से खड़ी रहती है।

माँ से बड़ा शब्द है तो बताओ

माँ से बड़ा अर्थ हो तो बताओ

माँ शब्द बड़ा अनमोल है।

माँ को शब्दों में बयान करना बहुत कठिन है। माँ मेरे लिए भगवान के समान है। माँ सब की जगह ले सकती है लेकिन मां की जगह कोई नहीं ले सकता। जब पूरी दुनिया आपका साथ छोड़ देगी, तब एक माँ ही है जो आपका साथ कभी नहीं छोड़ेगी। हमें अपनी माताओं का सम्मान करना चाहिए। कभी भी उनकी आंखों में आंसू नहीं आने देना चाहिए। माँ हमारी खुशी में ही खुश रहती है। उसे कोई धन दौलत का लालच नहीं उसे तो सिर्फ अपने बच्चों का प्यार चाहिए। माँ के जितना समर्पण और त्याग कोई भी नहीं कर सकता। माँ वह ज़मीन है जो खुद बंजर हो जाती है लेकिन अपने बच्चों का सही पालन पोषण करके उनका अच्छा मार्गदर्शन करके उन्हें उपजाऊ धरा के समान बनाती है। माँ से बड़ा दयालु और परोपकारी आज तक कोई नहीं बन पाया है और न ही बन पाएगा।

अक्षिता शाशनी आठवीं क

आठवीं ख के बच्चों के विचार

परिवार में माँ का स्थान



किसी ने सही ही कहा है कि भगवान हर जगह नहीं हो सकते इसलिए उन्होंने माँ को भेजा है। वह बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि कोई भी उसके जैसा और वास्तविक नहीं हो सकता। वह एकमात्र ऐसी है जो हमेशा अच्छे और बुरे समय में साथ रहती है। अपने जीवन में दूसरों से ज्यादा वह हमेशा हमारा ध्यान रखती है और प्यार करती है, जितना हम काबिल नहीं होते हैं। अपने जीवन में वह हमें पहली प्राथमिकता देती है। जिस दिन हम पैदा होते हैं, वह माँ ही होती है, जो सच में बहुत खुश हो जाती है। वह हमारे हर सुख दुख का कारण जानती है और कोशिश करती है कि हम हमेशा खुश रहें। माँ शब्द जुबान पर आते ही हमारा मन

उत्साहित हो उठता है। माँ अपने आप में ही एक शब्द न होकर अपनी सारी खुशियां अपने परिवार पर न्योछावर कर देती है। खुद भूखी रह कर अपने परिवार का पेट सिर्फ और सिर्फ माँ ही भर सकती है। माँ के जैसा संसार में दूसरा कोई नहीं है और न कोई होगा, जो बिना स्वार्थ अपना सारा प्रेम अपने परिवार पर खुशी-खुशी न्योछावर कर देती है। माँ पर परिवार में सबसे अधिक जिम्मेदारी होती है। वह पूरे परिवार के लिए सभी घरेलू कार्य जैसे भोजन पकाना, कपड़े धोना, घर की साफ सफाई करना और हमारी देखभाल करने में अपना अधिकांश समय देती है। माँ प्रकृति की तरह है जो हमेशा हमको देने के लिए जानी जाती है, बदले में बिना कुछ हमसे वापस लिये। इसलिए वह सुबह सुबह उठकर बच्चों के लिए खाना बनाने से लेकर पूरे परिवार का ध्यान रखती है। घर के बुजुर्गों को समय पर दवाई देने से लेकर उनका खान-पान का ध्यान रखती है। मां के बिना केवल घर ही नहीं हम भी अधूरे हैं इसलिए सही ही किसी ने सही कहा है।

खुदा का दूसरा रूप है माँ

माता की गहरी झील है माँ

वह घर किसी जन्त से कम नहीं जिस घर में खुदा की तरह पूजी जाती है माँ

परिणिता कटोच आठवीं ख



मांग लूं यह मन्त्र की फिर यह जहान मिले फिर वही गोद फिर वही माँ मिले

जननी जिसे हम प्यारी माँ कहते हैं। हमारा जीवन माँ के बदौलत ही है जीवन में उनका महत्व शब्दों से परे है माँ जिस तरह अपनी संतान से स्नेह रखती है। उसके लिए अपना सारा जीवन त्याग देती है। ऐसा उदाहरण इस संसार में मिलना असंभव है। भारतीय संस्कृति में माँ को ईश्वर से ऊपर का दर्जा दिया गया है। माँ परिवार के खानपान, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्नेह आदि का ख्याल रखती है। बल्कि परिवार को एक कड़ी में जोड़े रखने का काम भी करती है। एक परिवार के सभी सदस्य अपने अपने काम में मगन रहते हैं कोई होमवर्क में लगा है, तो कोई ऑफिस के काम में। पर माँ सभी के लिए खाना बनाना खिलाना घर का ख्याल आदि में व्यस्त रहती है। माँ के जीवन का अधिकतर समय संतान की देखभाल में व्यतीत होता है। माँ ही बच्चे की पहली गुरु होती है, जो सही गलत का ज्ञान कराकर उन्हें आगे आने वाले जीवन के लिए तैयार करती है। आधुनिक युग में माँ अपनी दोहरी जिम्मेदारियों को निभा रही है। एक गृहणी के रूप में तथा दूसरी व्यावसायिक। इस दोहरे जीवन में निसंदेह माँ को मुश्किलों से गुजरना पड़ता है, इसके बावजूद वह बड़ी से बड़ी विपदा को अपने साहस से हरा देती है। हिंदू धर्म ग्रंथों में यह बात सच ही कहीं गई है कि माँ देवताओं की तरह पूजनीय है वास्तव में मातृ शक्ति की तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। माँ वह है जो अन्य सभी की जगह ले सकती है, लेकिन माँ की जगह और कोई नहीं ले सकता अगर किसी की पूजा करनी ही है तू इतना याद रखना।

**कि घर से बड़ा कोई मंदिर नहीं
और माँ से बड़ा कोई भगवान नहीं।**

रिशिता कौंडल आठवीं ख



परिवार में माँ का स्थान

जननी जिसे हम प्यारी माँ कहते हैं। माँ जिस तरह अपनी संतान से स्नेह रखती है। उसके लिए सर्वस्व निस्वार्थ त्याग देती है। ऐसा दूसरा उदाहरण इस संसार में मिलना असंभव है। भारतीय संस्कृति में माँ को ईश्वर से ऊपर का दर्जा दिया गया है। माँ के बिना हमारे जीवन की कल्पना करना भी बेमानी है। वह जगत जग जननी है व समस्त कष्ट सहकर भी अपने शिशु को 9 माह तक गर्भ में रखती है। तथा उसे जन्म देती है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ स्वास्थ्य और असहनीय पीड़ा को भूलकर वह अपनी संतान को पाल-पोसकर बड़ा करती है। परिवार की तमाम समस्याओं और आर्थिक तंगी स्वयं के स्वास्थ्य के गिरावट के उपरांत भी वह अपनी संतान पति, सास-ससुर आदि के दुख दर्द को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। एक परिवार में सभी सदस्य अपने अपने कार्य में मगन रहते हैं। कोई स्कूल जाता है तो अपने होमवर्क में जुट जाता है और कोई ऑफिस के काम में पर माँ सभी के लिए खाना बनाना खिलाना घर का ख्याल रखना आदि में व्यस्त रहती है। इतना कठिन कार्य जीवन होते हुए भी सभी परिवारों में इन्हें व स्थान और सम्मान नहीं मिल पाता जिसकी वह हकदार है। आजकल के बच्चे टीवी मोबाइल और इंटरनेट पर ज्यादा समय व्यतीत करने लगे हैं। उनके पास अपनी माँ के पास बैठने और उनसे बात करने का समय ही नहीं है इसलिए अब बच्चों में अपने माता पिता के प्रति वैसा लगाव का अभाव पाया जाता है, जैसे पहले देखा जाता था। वर्ष में 1 दिन हैप्पी मदर्स डे मनाने और अपनी अपनी माताओं के साथ फोटो खिंचवा कर सोशल वेबसाइट पर इसे अपलोड करने में इनकी ज्यादा रुचि होती है। हालांकि अनेक सामाजिक संस्थाएं और फिल्मों के माध्यम से परिवार में माँ को सम्मान दिलाने की कोशिश की जा रही है। अतः हमें अपनी माताओं का सम्मान करना चाहिए और उनकी आंखों में कभी आंसू नहीं आने देना चाहिए जीवन के किसी भी मोड़ में हमें इन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहिए यदि हम घर पर अपने माता-पिता को खुश रखते हैं तो ऊपर ईश्वर भी खुश रहता है।

अनतिका जम्बाल आठवीं ख

कक्षा 9 वीं विषय & मादक द्रव्य और युवा पीढ़ी



समाज अनेक इकाइयों से बनी एक व्यवस्था होती है। इसमें प्रत्येक संस्था या इकाई का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवार भी ऐसी ही एक महत्वपूर्ण संस्था है। समाज हमारे देश की विशेषता, देश की शक्ति आदि को इंगित करता है। अगर कोई एक संस्था भी कमजोर हो जाती है तो हमारा देश भी कमजोर हो जाता है। इन संस्थाओं को कमजोर करती है बुराईयाँ। ऐसी ही एक बुराई है नशा।

+ नशाखोरी एक ऐसी बुराई है जो परिवारों को जड़ से खत्म करती है। बड़े बड़े घराने घराने भी

इसकी चोट में आकर निकृष्ट हो जाते हैं।

आज हमारे समाज में अनेक प्रश्न हैं। आखिर क्या कारण है, जो आज का युवा नशे की चपेट में आ रहा है, जो स्थल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाने जाते थे। वे अब नशे की तस्करी के लिए मशहूर हैं। मेरे शहर कुल्लू में भी खुले तौर से नशे के हेर-फेर होती है। कसोल जो कि अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता था। वह एक नशे का अड्डा बन गया है। गांव से लेकर बड़े-बड़े महानगरों तक युवा नशे की चपेट में आ रहा है। भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। आज भारत को विश्व गुरु बनाने की बात तो बड़ी सरलता से कह दी जाती है। परंतु सच तो यह है कि आज हमारा युवा नशे की काले बादलों के बीच में कहीं फस कर रह गया है।

क्यों न आज ही एक प्रण लें &

जन जन तक यह संदेश पहुंचाएंगे

नशे को कभी हाथ भी नहीं लगाएंगे

अधिकतर नशे का सेवन परीक्षाओं के समय पाया जाता है। युवा इस सोच से नशा करते हैं कि उनके उनका बोझ हल्का हो जाएगा। कुछ विद्यार्थी तो यह सोच का नशा करते हैं कि उनकी याद करने की क्षमता तेज हो जाएगी। इससे ज्यादा चिंता वाली बात तो यह है कि गांव में 25 % युवा नशाखोरी करते हैं। हाल ज्यादा बुरा तो दिल्ली के महानगरों के स्कूलों में है। जहां 35% छात्र इसका सेवन करता है। यह आंकड़ा खुली सोच वाले शहरों में ज्यादा है।

नशीले पदार्थों के जितने बुरे प्रभाव बताए जाएं। उतने कम पड़ेंगे। धूम्रपान से कैंसर टीवी जैसे रोग होते हैं। आजकल मां बाप भी खुले आम बच्चों के सामने बीयर की बोतल रख देते हैं। जिसके कारण उनपर बुरा असर पड़ता है। यदि आज का छात्र आज नशे में पड़ेगा तो हमारा भविष्य खराब होगा। हमें नशे के खिलाफ एक साथ आवाज उठानी पड़ेगी। व अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करना होगा।

नशा एक ऐसी लाइलाज बीमारी है जिसका इलाज अगर एम्स में भी करा लो। वह ठीक नहीं होगी। आज ही जागने का समय है। अगर आज नहीं जागेंगे तो फिर कल पछताएंगे। जिंदगी सिर्फ एक बार मिलती है। यदि इसे नशा करके बिताओगे तो फिर तुम्हारा ही बुरा होगा।

अंत में मैं इन पंक्तियों के माध्यम से अपने निबंध की इतिश्री करना चाहूंगा -

भाँग चरस छोड़कर कर लो धर्म ध्यान

बाद में पछताओगे तो होगा फिर कल्याण

नव्यम शर्मा 9 अ

मादक द्रव्य स्वर्ग के वेश में आप को नर्क में ले जाते हैं



यह ऊपर लिखी पंक्ति ने मादक द्रव्य को सही रूप से परिभाषित किया है। आप यह सोच सकते हैं कि कोई भी मादक द्रव्य का इस्तेमाल नहीं करता, लेकिन आप यह सुनकर हैरान हो जाएंगे कि ड्रग्स कई लोगों की जीवनशैली बन चुकी है। आप यह सोच सकते हैं कि यह केवल फिल्मी सितारों के साथ तथा फिल्मों में ही होता है, लेकिन अब इतने बुरे हाल हो चुके हैं कि युवा पीढ़ी ही मादक द्रव्य की लत में गिर चुकी है।

ड्रग, मादक द्रव्य वास्तव में होते क्या है? मादक द्रव्य एक पदार्थ या पदार्थों का संयोजन है, जो आपके मन की स्थिति को इस तरह से बदल सकता है कि आपको वास्तविकता और आपके जीवन में होने वाली चीजें देखनी बंद हो जाती है। इस कारण की वजह से आज के जमाने में अधिक से अधिक लोग एवं किशोर भी मादक द्रव्य का इस्तेमाल कर रहे हैं। मादक द्रव्य का इस्तेमाल एक व्यक्ति अलग-अलग कारणों से करता है।

यह देखने की जिज्ञासा कि मादक द्रव्य होते क्या है? हमारे मन में जिज्ञासा जाग उठती है, इनका सेवन करने की, सहकर्मी दबाव के कारण भी कभी-कभी हम इस राह पर चल पड़ते हैं और इससे पहले हमें पता चले, हम भी ड्रग्स में फंस चुके होते हैं।

कई बच्चे ड्रग्स का उपयोग करते हैं, क्योंकि दूसरे ऐसा कर रहे हैं और उन्हें डर लगता है कि स्वीकार नहीं किया जाएगा। एक ऐसे सामाजिक दायरे में जिसमें नशीली दवाओं का उपयोग करने वाले साथी शामिल है। कुछ किशोर अब साथ सामाजिक चिंता, तनाव से संबंधित विकारों और शारीरिक दर्द से पीड़ित होते हैं। ड्रग्स का उपयोग वे इन भावनाओं को कम करने के लिए करते हैं। तनाव विशेष रूप से नशीले पदार्थों के उपयोग को शुरू करने और जारी रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

किशोरों को नए अनुभवों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया जाता है, उन्हें ऐसे काम करके साहसी समझा जाता है। युवा पीढ़ी में मादक पदार्थ की लत के बढ़ते मामले चिंता का एक गंभीर कारण बनती जा रही है। उज्ज्वल भविष्य और जीवन उन्हें अच्छे स्वास्थ्य के लिए छात्रों को नशीली दवाओं के उन्मूलन पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें कभी भी नशीले द्रव्य का उपयोग नहीं करना चाहिए।

**नशीली पदार्थ से रहो दूर
जीवन सुख पाओ भरपूर**

भव्यश्री जम्वाल 9 अ



वर्तमान काल कि जो युवा पीढ़ी है वही आगे भविष्य में आने वाले देश के लिए और देश के विकास के लिए उपयोगी है, परंतु क्या होगा अगर वही युवा पीढ़ी अभी से डगमगाने लग पड़े और अभी से अंधकार के मार्ग में चल पड़े? जैसे-जैसे समय बदल रहा है, मनुष्य नई नई खोज कर रहा है। अच्छे परिवर्तनों के साथ बहुत सारे बुरी और विकट चीजें भी आ गई हैं, जिनमें से एक है नशीले पदार्थ।

यही नशे हैं जो युवाओं का भविष्य पूरी तरह से नष्ट कर रहे हैं और इस समय में यह सब नशे अधिकतर रूप में प्राप्त किए जाते हैं तथा इनका सेवन भी अधिकतर किया जाता है। आज के समय नशीली वस्तुएं बहुत सामान्य हो गई हैं, परंतु यह असल में है क्या? यह ऐसी चीजें हैं जिनका सेवन करने से हम हमारा सारा होश खो देते हैं और इनके बिना पागल हो जाते हैं। युवा पीढ़ी आजकल हमेशा विचलित ही रहती हैं, वे कभी एक चीज पर ध्यान नहीं लगा पाते हैं। उनकी मानसिक स्थिति पूरी तरह से खराब हो जाती है, जो उनके भविष्य पर भी असर डालता है। युवा अपनी मुश्किलों तथा परेशानियों को थोड़े समय के लिए भूलने के लिए नशे का सेवन करते हैं तथा उनके आदि बन जाते हैं। युवा पीढ़ी अपनी पूरी समझदारी का प्रयोग गलत चीजों में ही करने लगते हैं। वे अपने लक्ष्य को ढूंढने के बजाय अपना ध्यान और समय बुरी और दुष्ट चीजों में बर्बाद कर देते हैं। वे अपने प्रलोभन को नियंत्रण में नहीं रख पाते। उन्हें सही और गलत की पहचान नहीं होती। युवा पीढ़ी के पास कारण जरूर होते हैं, जैसे कि सहकर्मी दबाव, दूसरों

ने उनको मजबूर किया या प्रेरित किया और लालच की वजह से तथा घमंड के कारण वे इन नशीली वस्तुओं का सेवन करते हैंA

इस उम्र में युवा को कई परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जिसके कारण भी अपना संतुलन बहुत आसानी से खो देते हैं तथा अवसाद ग्रस्त हो जाते हैंA यही मुख्य कारण है कि युवाओं का उनके परिवार तथा पिता के साथ अच्छा तथा शांतिपूर्ण संबंध नहीं होताA

आज का छात्र कल का भविष्य है,

अगर आज ही लड़खड़ाएगा तो,

देश का भविष्य भी लड़खड़ा जाएगाA

अगर एक बार नशे की चपेट में आ जाते हैं, तो उसे छोड़ना नामुमकिन के करीब हैA आश्चर्य की बात यह है कि किसी समय में नशे का आविष्कार रोगों व रोगियों की परेशानियों को दूर करने के लिए किया गया था, परंतु वर्तमान में यह हम पर उल्टा पड़ रहा हैA

मत करो अपने घर की शांति भंग,

मत दिखाओ इतने अलग-अलग रंग A

भारवी कौंडल 9अ



भारत दुनिया के देशों में सबसे अधिक युवा वर्ग वाला देश है A यह भारत के लिए शान की बात है, क्योंकि युवा पीढ़ी पर ही देश की तरक्की निर्भर होती हैA लेकिन जब युवा पीढ़ी गलत राह पर चली जाए तोA फिर देश की तरक्की कैसे हो सकती है। आज मादक द्रव्य इस तरह युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है जैसे एक दीमक लकड़ी को बर्बाद कर देता हैA नशा नाश की सम्मान होता है तथा आज भारत की युवा पीढ़ी बहुत तेजी से नशाखोरी की प्रवृत्ति अपना रही है A

कहा भी गया है -

नशा चाहे जैसा हो

होता है यह बेकार

शरीर तोड़ता बीमारी लाता

कर देता है यह लाचार

मादक द्रव्य व्यसन वह स्थिति है, जिसमें शरीर को कार्य करते रहने के लिए मादक पदार्थों के प्रयोग की आवश्यकता महसूस होती हैA यदि कोई व्यक्ति मादक पदार्थों का आदी है और यह इन पदार्थों का सेवन बंद कर देता है, तो उसके शरीर में अनेकों प्रकार की बाधाएं उत्पन्न होने लगती हैं, जैसे शारीरिक दर्द, बेचैनी एवं रुग्णता आदि A

ज्यादातर युवा पीढ़ी अपने तनाव को दूर करने के लिए नशीले पदार्थों का सेवन करती हैA कुछ युवा लोग अपने अपने से व्यस्क लोगों को नशीले पदार्थों का सेवन करते हुए देख नशीले पदार्थों का सेवन करना शुरू कर देते हैं A कुछ लोग बुरी संगत में आकर नशीले पदार्थों का सेवन करना शुरू कर देते हैंA युवा वर्ग के लिए नशा एक फैशन बन चुका है। आज की युवा पीढ़ी नशे को फैशन समझने लगी है, उन्हें लगता है कि नशा करना एक शान की बात है दूसरों की देखा देखी में भी नशा करने लगते हैं, उन्हें लगता है कि जो नशा कर रहा है वह आधुनिक जीवन जी रहा है इस तरह अपने आप को आधुनिक बनाने के चक्कर में नशे की चपेट में आ जाते हैं A आज के युवा वर्ग की यही समस्या है कि उनकी सहनशक्ति बहुत कम हो चुकी हैA बहुत जल्दी अपना होंसला खो देते हैं A किसी चीज में सफलता नहीं मिलती, तो उन्हें लगता है कि उनकी जिंदगी खत्म हो चुकी है डिप्रेशन में चले जाते हैं और नशे की गिरफ्त में फंस जाते हैंA

नशे की मार

सबसे बड़ी मार

बर्बाद करे सुखी परिवार

माता&पिता की जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों को ऐसी हालत से लड़ना सिखाकर उन्हें मजबूत बनाए उनके असफलता पर उन्हें डांटने के बजाय उन्हें दूर दोबारा प्रयास करने के लिए हिम्मत बढ़ाएA जिंदगी में बहुत सारी राह है एक राह पर सफलता नहीं मिली तो शायद उसी राह पर सफलता मिल जाए लेकिन चलना बंद नहीं करना चाहिएA

श्रेया ठाकुर 9अ

मादक द्रव्य और युवा पीढ़ी



नशा एक अभिशाप है, सब को यह समझाएँ A

देश का भविष्य है युवा, इनको इस से बचाएँ AA

युवा इस देश का भविष्य है। अगर वे चाहें तो मेहनत करके देश का नाम रोशन कर सकते हैं और अपने साथ-साथ अपने परिवार व देश को गर्वित महसूस करवा सकते हैं, परंतु आजकल के युवा नशा कर अपनी जिंदगी बर्बाद कर रहे हैं और अपने परिवार का भी नाम खराब कर रहे हैं, जिससे देश में विकास होना मुश्किल है। नशा एक ऐसी चीज है जिस में नशीले पदार्थ की लत लग जाती है। नशा किसी भी कारण से हो सकता है। इसका मुख्य कारण है गलत संगत में पड़ना और इसकी आदत लग जाना। इसके और भी कारण हैं & घर में लड़ाई का माहौल, प्यार न मिल पाना, तनाव, संबंध में धोखेबाजी, दबाव आदि। आज देश में 70 से 75 % लोग अनेक प्रकार के नशों में पड़े हैं। जैसे गुटका, खैनी, तंबाकू, शराब, बीड़ी, हीरोइन चिटा आदि नशीले पदार्थों का प्रयोग कर रहे हैं। देश में मर्द ही नहीं बल्कि औरतें भी इनकी ओर आकर्षित हैं। देश में 20 % औरतें बीड़ी का सेवन करती हैं। आज शराब पीकर गाड़ी चलाना और फिर एक्सीडेंट होना आम सी बात हो गई है। आजकल 18 वर्ष से नीचे बच्चों को ऐसी चीजें बेचना मना है, परंतु फिर भी लोग बेचने से नहीं हटते।

नशा जो करता है इंसान

बन जाता है हैवान

न रहती है उसकी इज्जत

न रहता है धर्म ईमान

नशे से बचने के कई तरीके हैं। आजकल सरकार द्वारा भी नशा मुक्त अभियान चलाए जा रहे हैं। हमें तनाव से दूर रहना चाहिए। माता-पिता को बच्चों की हर बात समझनी चाहिए। अच्छी संगत का साथ होना चाहिए। लड़ाई झगड़े वाले माहौल से दूर रहना चाहिए। युवा को खुद पता होना चाहिए कि हमें जीवन में क्या करना है। हमें अपने साथ & साथ औरों को भी सतर्क करना चाहिए और जहां भी नशा करते लोग दिखाई दे वहां उन्हें सतर्क करें और उन्हें नशा करने से रोके और उन्हें नशे के दुरुपयोग बताएं जहां भी **नो स्मोकिंग** का पोस्टर देखे उसका पालन करें दूसरों की मदद कर औरों का जीवन बचाएं।

देवांशी मोदगिल नवी ब



किसी नशीले पदार्थ अमावा मादक द्रव्य की लत लग जाने को नशाखोरी कहते हैं। भारत की युवा पीढ़ी तेजी से नशाखोरी की ओर बढ़ती जा रही है। अनुमानों के अनुसार 130 करोड़ की आबादी में से 100 करोड़ लोग नशा करते हैं और बहुत से लोगों को तो इसकी लत भी लग चुकी है। युवा पीढ़ी का नशाखोरी की ओर बढ़ने के बहुत से कारण होते हैं। किसी ने सही ही कहा है & **नशा नाश है**। युवा पीढ़ी यह जानते हुए भी नशा करना चाहती है। क्योंकि नशे का प्रसार ही इतना व्याप्त हो गया है।

नशा चाहे कैसा भी हो कर देता है बेकार कहने का अर्थ है कि नशा अनेक प्रकार का होता है जैसे तंबाकू, गांजा और धूम्रपान, परंतु नशा चाहे जिस भी प्रकार का हो यह हमें कहीं का भी नहीं छोड़ता। नशा हमें मानसिक व शारीरिक रूप से बीमार कर देता है और हमें हर तरफ से लाचार बना देता है। आज के जमाने में माता-पिता अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते और भी बच्चे नशे की ओर प्रेरित होते हैं। जब बच्चों पर कोई अंकुश नहीं होता, तब एक बुरी आदत जैसे कि नशे के शिकार हो जाते हैं। उन्हें नशीले पदार्थों के बारे में उनके बुरे असर के बारे में पता तो होता ही नहीं है। अब सहकर्मी दबाव, कुसंगति या फिर आधुनिक दिखने के चक्कर में नशा करने लगते हैं और खुद का नाश स्वयं ही करते हैं। देखा जाए तो उसमें सरकार का भी हाथ है। भारत के किसी भी कोने में चले जाओ वहां अच्छी किताबें, वस्त्र व भोजन मिले न मिले पर नशीले पदार्थों की बिक्री देखने को जरूर मिलेगी। ऐसे ही यह सब देखते ही छोटे-छोटे बच्चे भी नशीले पदार्थों की तरफ आकर्षित होते हैं। 18 साल से छोटे बच्चे का नशीले पदार्थ लेना या उन्हें बेचना गैरकानूनी है, पर फिर

भी दुकानदार अपने फायदे के लिए बच्चों को भी मादक द्रव्य बेचते हैं। उनके लिए नशा एक मीठा जहर है, जो पहली बार अच्छा लगता है और अगर बार एक बार नशीले पदार्थों की लत लग जाए तो कभी नहीं हटती। नशा बूंद-बूंद करके अंदर जाता है और जिंदगी सांस-सांस कर बाहर आती है। यदि समय पर नशीले पदार्थों को लेना बंद नहीं किया गया, तो यह युवा पीढ़ी के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन जाएगी। यदि यह समय पर नहीं रोका गया, तो देश का भविष्य लड़खड़ा जाएगा। इसे सिर्फ युवा पीढ़ी को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में शिक्षित कर ही रोका जा सकता है ताकि वह एक सफल व तंदुरुस्त जीवन जी पाए।

नशे को जो अपनाएगा पूरा जीवन पछताएगा

केशिका वर्मा नवी ब

कक्षा नवी ब से के विचार



जन-जन का यही संदेश

नशा मुक्त हो अपना देश

समाज में अधिकतर अपराधों की वजह नशा माना जाता है। पहले तो युवा स्कूल व कॉलेज में बीड़ी सिगरेट और गुटका का सेवन मस्ती करने के लिए करते हैं, पर बाद में इनके लत लग जाती है। कुछ लोग तो शराब, चरस, अफीम के इतने आदी हो जाते हैं कि इनसे छुटकारा पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। नशा चाहे किसी का भी प्रकार का हो, इससे मानसिक व शारीरिक नुकसान पहुंचता है। युवाओं को मादक पदार्थों का सेवन करने से बचना चाहिए।

छोड़ो तंबाकू और शराब

न कर अपनी जिंदगी को खराब

नशे की मुक्ति के लिए उपाय यह है कि समाज में नशे की बिक्री करने वालों पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। इसके लिए प्रदेश सरकार को भी कड़े कदम और निर्णय लेने होंगे। पुलिस समय-समय पर सार्वजनिक स्थानों पर दबिश देकर नशे का सेवन करने वालों पर शिकंजा कस सकती है। लेकिन आम जनता का भी सहयोग अपेक्षित है। युवाओं को जागरूक रैलियों के माध्यम से भी नशा न करने के लिए जागरूक किया जा रहा है। नशा समाज में कैंसर की बीमारी से कम नहीं है। इसका सेवन करने वाले अपने आपको तबाह कर रहे हैं। इस पर पैसे खर्च करने से अच्छा है कि आप अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने में पैसों इस्तेमाल करना चाहिए।

नैनिका गुप्ता नवी ब

कक्षा दसवीं के बच्चों विचार

विषय & आत्मविश्वास के लाभ



आत्मविश्वास शब्द आत्म तथा विश्वास से मिलकर बना है जिसका अर्थ है खुद पर विश्वास होना। यदि हमें खुद पर विश्वास होगा, तभी हम सफल हो पाएंगे। आजकल की पीढ़ी में आत्म विश्वास होना बहुत आवश्यक है। हमारी जिंदगी के हर एक पड़ाव को पार करने के लिए आत्मविश्वास ही जिम्मेदार है। आत्मविश्वास सफलता पाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

जो होगा आत्मविश्वास से ही होगा।

आत्मविश्वास एक विद्यार्थी की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विद्यालय के काफी काम जैसे अन्य प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए भी आत्मविश्वास चाहिए। हजारों बच्चों के सामने अकेले बोलना साहस का काम है। यदि एक विद्यार्थी के पास आत्म विश्वास नहीं होगा, तो वह कुछ भी ढंग से नहीं कर सकता। चाहे वह परीक्षा ही क्यों न हो। आत्मविश्वास जरूर काम आता है। जब हम परीक्षा दे रहे होते हैं, तो हम हर एक सवाल का उत्तर सोच कर लिखते हैं। जिस व्यक्ति के पास आत्मविश्वास है। वे उत्तर सोच कर खुद पर विश्वास रखकर लिख देता है परंतु जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास नहीं होता है उत्तर पता होते हुए भी दूसरों के उत्तरों पर झकंटा है और सही उत्तर आते हुए भी गलत लिख आता है। केवल विद्यार्थी के जीवन में ही नहीं परंतु हर एक मनुष्य के जीवन में आत्मविश्वास महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चाहे वह बड़ा हो, बुढ़ा हो या बच्चा ही क्यों ना हो। आत्मविश्वास हमें आत्मनिर्भर बनाता है। यदि हम में आत्मविश्वास है तो हम कुछ भी कर सकते हैं हमें किसी की भी जरूरत नहीं।

आत्मविश्वास का सफलता है लाभ, मुसीबत आई तो हो जाएगी पार, डरकर कब तक रहोगे दे दो उसे मात आरुषि गौतम दसवीं क



विषय- सह शिक्षा के लाभ

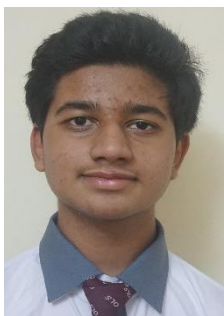
आज की दुनिया में हर व्यक्ति का शिक्षित होना अति आवश्यक है। शिक्षा के बिना इस संसार में गुजारा करना बहुत मुश्किल हो गया है। एक व्यक्ति ही संसार में सफलता की ऊंचाइयों को छू सकता है इसलिए सरकार भी इस मुद्दे को गंभीरता से ले रही है। इसको देखते हुए हर जगह विद्यालय खुले हैं। परंतु प्रश्न यह है कि क्या सह शिक्षा के लाभ हैं? सह शिक्षा का अर्थ है एक ऐसा शिक्षण स्थान जहां पर लड़के और लड़कियां एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। आजकल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में सह शिक्षा प्रचलित है। सह शिक्षा के कई लाभ हैं। उसमें साफ दिखते हैं, परंतु कुछ ऐसे लाभ हैं जिसका असर समाज पर पड़ता है, जिसमें सबसे बड़ा लिंग समानता। भारत का एक ही सपना हर घर में लिंग समानता। शिक्षा में दोनों लड़का और लड़की एक साथ एक छत के नीचे शिक्षा ग्रहण करते हैं। जिससे कक्षा में समानता होती है तथा दोनों में एक दूसरे के साथ घुलमिल जाते हैं। साथ ही साथ समाज में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का सकारात्मक संदेश जाता है। इससे लड़कियां प्रतिभा को भी दर्शा सकती हैं तथा पर यह भी साबित कर सकती हैं कि लड़कियां लड़कों से बिल्कुल भी कम नहीं होती हैं।

सह शिक्षा सबके लिए जरूरी क्योंकि यही है सफलता की तिजोरी

इसका अन्य लाभ है यह सत्य है कि इससे छात्रों में एक दूसरे के प्रति हीन भावना नहीं होती। सब मिलजुल कर रहते हैं। ऐसा दिखता है कि लड़के और लड़की एक दूसरे से हटके चाहते हैं लेकिन सह शिक्षा से यह समस्या दूर हो जाती है तथा भविष्य में इसका फायदा होता है। अतः यह साफ है कि यही सबसे बेहतर तरीका है शिक्षा ग्रहण करने का। सह शिक्षा से लिंग समानता आती है। हिचकिचाहट दूर होती है, इससे भविष्य में छात्रों को समाज में मदद होती है इसलिए सह शिक्षा ही बेहतर है।

अलंकृत ठाकुर दसवीं क

विषय -कड़ी मेहनत और सफलता



मनुष्य जीवन में मेहनत की अहम भूमिका होती है। हर मनुष्य को जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। जैसे छोटे से बच्चे को रोने की मेहनत करनी पड़ती है, जिससे वे अपने माता-पिता को यह बता सकें कि उसे भूख लग रही है। विद्यार्थी जीवन में मेहनत की बहुत जरूरत होती है। विद्यार्थी जीवन को ब्रह्मचारी पहलू भी कहते हैं। एक विद्यार्थी को अपने जीवन में मेहनत को अपने गुरु की तरह मानना चाहिए। बिना मेहनत के विद्यार्थी का जीवन बेकार है। बड़े बुजुर्ग कहते हैं & **मेहनत ही सफलता की कुंजी है।**

एक मेहनती विद्यार्थी अपना हर काम समय पर करता है। अपनी परीक्षाओं के लिए कड़ी मेहनत करता है और अंत में उसे अपने परीक्षा में सफलता मिलती है। एक शेर दिन के 20 घंटे आराम करता है। जंगल का राजा कहलाता है। उसे भी अपना पेट भरने के लिए शिकार करने की मेहनत करनी पड़ती है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि मनुष्य जितना भी ताकतवर हो, उसे भी अपने जीवन में मेहनत कर मेहनत करनी होती है। आज के युग में मेहनती लोगों की संख्या बहुत कम होती जा रही है और मनुष्य कमजोर होता जा रहा है, पर हर चीज बनी बनाई चाहता है और मेहनत करने से कतराते हैं। जो मेहनत नहीं करता है उसका जीवन नर्क के समान हो जाता है।

बड़े बुजुर्ग कहकर चले गए & **कर कर मेहनत कर सफलता की चिंता न कर।**

जो व्यक्ति अपने जीवन में मेहनत करता है उसका जीवन उज्ज्वल हो जाता है।

कबीरदास जी कहते थे &

काल करे सो आज कर आज करे सो अब

पल में प्रलय होगी बहुरि करेगा कब

आप जीवन में मेहनत हर समय करनी चाहिए और किसी मौके का इंतजार नहीं करना चाहिए।

ARJUN SALHURIA दसवीं क

विषय & आत्मविश्वास का महत्व



आत्मविश्वास दो शब्द आत्म & स्वयं तथा विश्वास शब्द से बना हुआ है। जिसका अर्थ होता है कि हम खुद पर कितना तथा कैसे विश्वास करते हैं? यह हमारे व्यक्तित्व का बहुत ही अहम तथा सबसे जरूरी हिस्सा है। आत्मविश्वास के बिना एक व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल नहीं कर सकता।

**मन के हारे हार है मन के जीते जीत,
असफलता से सीखो सबक गर्मी हो या शीत।**

अर्थात् जो व्यक्ति मन से हार जाता है या मन उस उसके मन से आत्मविश्वास खत्म हो जाता है। वह

अपने जीवन में सफलता हासिल नहीं कर पाता। उसे हर क्षेत्र में हार का सामना करना पड़ता है तथा इन्हीं कारण उसके अंदर का बचा हुआ विश्वास खत्म हो जाता है तथा फिर वह अपनी क्षमता पर प्रश्न करने लगता है परंतु यह एक आत्मविश्वास वाले व्यक्ति के साथ नहीं होता। वह खुद पर भरपूर विश्वास करता है तथा सफलता प्राप्त करता है। उसके मार्ग में आने वाली हर एक मुश्किलों का वह सामना करता है तथा कोई भी बुरी चीज या किसी भी बुरे व्यक्ति का प्रभाव उसकी जिंदगी में नहीं पड़ता। वह एक सकारात्मक व्यक्ति की तरह अपनी जिंदगी खुशी-खुशी बिताता है। हमारे रास्ते में आत्मविश्वास को हमारे व्यक्तित्व का अहम हिस्सा माना गया है जैसे कि पांच पांडवों ने अपने ऊपर आत्मविश्वास करके 100 कौरवों से युद्ध लड़ा तथा सफलता हासिल की महात्मा गांधी जी, सुभाष चंद्र बोस जैसे अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने भी अपने ऊपर पूरी तरह से विश्वास करके देश को आजादी दिलाई।

जीवन में सुख & दुख, आशा & निराशा, जय & पराजय, लाभ & हानि, सफलता & असफलता धूप छांव की तरह आती जाती रहती है परंतु हमें स्वयं पर हमेशा विश्वास रखकर इन कठिनाइयों का डटकर सामना करना चाहिए तथा सफलता हासिल करनी चाहिए।

उमेश्वरी गौरी दसवीं ब

विषय भारतीय छात्र अवसाद ग्रस्त क्यों?

छात्र शिक्षक के अनुसार

शिक्षक स्कूल के अनुसार

स्कूल सरकार के अनुसार



विश्व में बहुत से विद्यार्थी हैं बढ़ती जनसंख्या का छात्रों की बढ़ती में सबसे बड़ा हाथ है। विश्व में कई प्रकार के छात्र होते हैं हर व्यक्ति एक जैसा नहीं होता। सब का व्यक्तित्व एक जैसा नहीं होता। भारत में 10 लाख से ऊपर छात्र हैं, जिसमें से 500000 छात्र 90% से ऊपर अंक लाते हैं। भारतीय छात्र सभी क्षेत्र में अव्वल है हर कहीं भारतीयों का ही गुणगान है। भारत एक संपूर्ण देश है हमारे पास हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। पूरे विश्व में भारतीयों का गुणगान है तथा भारतीय विश्व के हर कोने में हैं अधिकतर भारत के लोग दूसरे देशों में नौकरी हेतु जाते हैं।

भारत की जनसंख्या यह तो अधिकतर युवा विरोधी रोजगार है। हमारे संविधान द्वारा दलित वर्ग के लिए अनेक तरह की सुविधाएं दी गई हैं जिसके द्वारा वीपी सामान्य वर्ग के योग्य युवाओं की तारा शिक्षा हासिल कर सके और बेहतर नौकरी प्राप्त कर सकें। कई युवा इस मानसिक बीमारी से जूझते हैं किसे कहा जाता है? अवसाद। कई भारतीय माता-पिता अपने बच्चों पर इतना दबाव डालते हैं कि उनसे दिन रात मेहनत करवाते हैं और जब वे उनके मनपसंद नौकरी न मिले तो उनकी आलोचना करते हैं। यह भी एक मुख्य कारण है कि आजकल की युवा मानसिक तौर पर पीड़ित है। आजकल की पीढ़ी दूसरों के दिखावे से जल्दी आकर्षित हो जाती है। सबको आजकल या तो अमीर होना है या प्रसिद्ध होना है और जब वह लोग जीत हासिल नहीं कर पाते हैं। दूसरों की तरह न बन पाते तो वह निराश होकर अधिक सोचने लगते हैं जिससे उन्हें मानसिक तनाव से जूझना पड़ता है। आजकल के युवाओं को यह चीज समझनी चाहिए कि बाहरी चीजों का कोई मूल्य नहीं है और हमें वैसा ही करना चाहिए जिससे हमें खुशी मिलती है। हमें बाकी लोगों पर ध्यान न देकर अपने ऊपर ध्यान देना चाहिए और अपनी खुशी को सर्वोत्तम स्थान देना चाहिए। इस दुनिया में हमें कुछ देना चाहिए तथा दूसरों के लिए चीजों पर दूसरों की बातों पर ध्यान न देना चाहिए। हम दूसरों की खुशी से इतने प्रभावित हैं कि अपने बारे में भूल जाते हैं और कहीं ना कहीं हर छात्र साथ-साथ से भर जाता है।

स्निग्धक सूद दसवीं ब

विषय & आत्मविश्वास का महत्व



मन के हारे हार है मन के जीते जीत किसी ने ठीक ही कहा है & जीत की शुरुआत मन से होती है। अगर हमें स्वयं पर पूर्ण विश्वास है तो हम संसार की बड़ी से बड़ी दुविधा को सुलझा सकते हैं। अगर हमें खुद पर विश्वास नहीं होगा, तब आप अपने असली सामर्थ्य का पूरा लाभ नहीं उठा सकते। संसार में कुछ भी करने के लिए आत्मविश्वास का अत्यधिक महत्व है। अपने उद्देश्य को पाने का सबसे आसान उपाय स्वयं पर विश्वास होता है। ऐसे अनेक बार हुआ है कि ऐसे व्यक्ति जो किसी कार्य को करने के काबिल नहीं थे, वह उसे विश्वास के कारण कर दिखाते हैं। संसार में कोई भी युद्ध जीतने के लिए प्रतिष्ठा अनुशासन और सबसे ज्यादा आत्मविश्वास की आवश्यकता पड़ती है। अगर तुम्हारे साथ एक हजार आदमी हैं परंतु विश्वास नहीं तो तुम एक युद्ध जीत जीतोगे पर अगर तुम्हारे पास आत्मविश्वास है तो तुम सारी दुनिया जीत जाओगे। अगर हम रूस और यूक्रेन का उदाहरण लें, तो हमें जीवन में आत्मविश्वास का महत्व पता लगेगा। जिस देश के पास मुट्ठी भर सैनिक उसने दुनिया के सबसे ताकतवर देश रूस के छक्के छुड़ा दिए हैं। स्वयं पर विश्वास करो स्वयं को सफल करो। यही चेक करके तुम अपने कर्मों का फल भरो। यही मानव यही मानव जीवन का सबसे बड़ा मंत्र है। इसी का पालन कर हम जीवन के हर मुसीबत का हल निकाल सकते हैं। जो अपनी भूमिका पर विश्वास करके उसे निभाएगा वही जिंदगी में सुकून सुकून का फल पाएगा।

नीलकंठ सूद दसवीं ब

विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। छात्रों के द्वारा इस उपलक्ष्य पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग की तरफ से परिचयात्मक भाषण और एक कविता प्रस्तुत की गई, जो निम्न प्रकार से हैं

परिचयात्मक सम्बोधन

देश



दृश्य जो देखा यह
आजादी का दिन याद आ गया
की मिट्टी की खुशबू मीठी
देशभक्तों का बलिदान याद आ गया
एकता का प्रतीक तिरंगा अपना
राष्ट्रगान का मधुर स्वर मन को भा गया

यह तो सर्वविदित है कि आज पूरा भारत क्षेत्र में स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे देश के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। इस शुभ दिन भर हमें सैकड़ों सालों की दासता से मुक्ति मिली थी। ऐतिहासिकता की दृष्टि से यह दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए यह दिन राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष का स्वतंत्रता दिवस इस कारण भी महत्वपूर्ण है कि इस साल हमारे देश की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ है। जिसे आजादी का अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। राष्ट्रीय चेतना को भारत के घर घर पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अहमदाबाद गुजरात में साबरमती आश्रम से एक पद यात्रा को हरी झंडी दिखाकर स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के लिए समर्पित आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन किया है। इस महोत्सव के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान चलाया गया है, जिसका उद्देश्य 13 अगस्त से 15 अगस्त 2022 तक प्रत्येक घर पर तिरंगा फहराना है।

अंत में मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि - जब तक हम हमारे राष्ट्र के भीतर सद्भाव और एकता निर्मित नहीं करते हम स्वतंत्रता से कोसों दूर हैं। हम सभी को अब भी एक लंबा रास्ता तय करना है और यह हम में से हर एक और हर किसी के साथ शुरू होता है।

धन्यवाद! जय हिंद! जय भारत!

बिमला देवी
हिंदी अध्यापिका

मेरा वतन और तिरंगा



वतन है मेरा सबसे महान
प्रेम सौहार्द का दूजा नाम
वतन पर है सब कुर्बान
शांति का दूत है मेरा हिंदुस्तान
दे सलामी इस तिरंगे को
जिससे तेरी शान है

सर हमेशा ऊंचा रखना इसका
जब तक तुझ में जान है
तिरंगा देश की शान है
हर भारतीय का स्वाभिमान है
यही है गंगा यही हिमालय यही हिंद की जान है
तीन रंगों में रंगा हुआ यह अपना हिंदी हिंदुस्तान है
जय हिंद! जय भारत!

यक्ष ठाकुर 4ब

भाषण- स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर



75 साल हुए आजादी को
चलो आज फिर एकता दिखाते हैं
मिलकर आजादी का हम सब
अमृत महोत्सव मनाते हैं

आजादी का असली मतलब तो वही समझ सकता है, जिसने कभी गुलामी की होल हम सौभाग्यशाली है कि हमने स्वतंत्र भारत में जन्म लिया है A जब हम फिरंगियों के फेरों में फंस गए थे तो रंग दे बसंती चोला की एक आवाज में टोलों के टोलों उमड़ आते थे और उनके वंदे मातरम की के नारों से खून में आने वाला तूफान अंग्रेजी शासकों की जड़ों में तूफान ला देता थाA यह उस दौर की देशभक्ति थी लोग मर जाते थे, मिट जाते थे, फांसी चढ़ जाते थे, तो वह भी अपनी देशभक्ति साबित कर रहे होते थे A तब देश बलिदान मांगता था तब देश पर लुट जाने को, मिट जाने को, फांसी चढ़ जाने को कहता था, लेकिन अब देश लड़ जाने को ,मिट जाने को, फांसी चढ़ जाने को नहीं कहता बल्कि मेरे विचारों में यदि कोई व्यक्ति अपना काम पूरी ईमानदारी पूरी मेहनत पूरी लगन से करें, तो वही सबसे बड़ा देशभक्त है मैं नहीं मानती कि फेसबुक और व्हाट्सएप की डीपी को तीन रंगों में रंगना ही देशभक्ति है और यदि आप कहेंगे साल में दो बार हाथ में तिरंगा ले लेना देशभक्ति है, तो मैं पूछना चाहूंगी कि फुटपाथ पर रहने वाला वह बच्चा, ट्रैफिक में नंगे पांव वह बच्चा तिरंगा बेच रहा होता है तो क्या उसे देशभक्ति कहेंगे। यह उसकी देशभक्ति नहीं है, उसके पेट की भूख की शक्ति है जो उसे ऐसा करने पर मजबूर करती है क्योंकि न मंदिर को जानते हैं, ना मस्जिद को जानते हैंA

जो पेट के भूखे होते हैं न, वह सिर्फ भोजन को जानते हैंAA

अपने परिवार अपने समाज अपने देश के लिए समर्पण का अभाव है देशभक्ति और हर देशद्रोही के जीवन में आने वाला तूफान है देशभक्ति, ताकि हर देशद्रोही समझ सके कि&

अगर तू परिंदा है, तो यह आसमान तेरा है

अगर तू दरिद्र है, तो यह शमशान तेरा है

भाईचारे से रहना है, तो रह इस जमीन पर

वरना यह कब्र भी तेरी है, और कब्रिस्तान भी तेरा है

लेकिन अब देशद्रोही से ज्यादा देशभक्ति आहत होती है, जब एक बेटा अपने बूढ़े मां बाप को वृद्धाश्रम की चौखट पर छोड़ जाता हैA कराह उठती है देशभक्ति जब मुसीबत में फंसे लोगों की जान बचाने से ज्यादा हम सेल्फी लेकर अपने लाइक्स बढ़ाने में लगे रहते हैंA आज के इस दौर के युवा जिनके ऊपर थी जिम्मेदारी अपने देश को, अपने समाज को, अपने राष्ट्र को बांधे रखने की, वही युवा अब छोटी सी स्क्रीन पर कोमल उंगलियों के घर्षण मात्र से अपनी भावनाओं की इमेजेस भेज रहा हैA हम ऐसे समाज में जीते हैं, **जहां पत्थर की मूरत को छप्पन भोग और भूखे नंगे तड़पते रह जाते हैं लोग A** मजदूर को मजदूर समझिए मजबूर नहीं गरीब को काम दीजिए दान नहीं और अगर दान देने के इच्छुक है तो जीते जी रक्तदान दीजिए और मरने के बाद अंगदान दीजिए और किसी मरते हुए को जीवनदान दीजिएA यही सच्ची देशभक्ति और सच्चा राष्ट्रप्रेम हैA

स्वदेश से अनुराग हो सबका सहयोग साथ हो जन-जन का प्रयास हो मन में यही विश्वास हो देश का विकास होA

स्वस्तिका सूद पांचवी ब

फादर्स डे



जब मम्मी डांट रही थी
तो कोई चुपके से हंस रहा था
जब सो रहा था मैं तो
कोई चुपके से सिर पर हाथ फेर रहा था
वो थे मेरे पापा
जब मैं सुबह उठा
तो कोई बहुत थक कर भी

काम पर जा रहा था
खुद कड़ी धूप में रहकर
मुझे ऐ सी में सुला रहा था
वो थे मेरे पापा
सपने तो मेरे थे
पर उन्हें पूरा करने का रास्ता
कोई और बताए जा रहा था
मैं सिर्फ अपनी खुशियों में हंसता हूँ
पर मेरी हंसी देखकर कोई अपनी थकान बुलाए जा रहा था
वो थे मेरे पापा
किसी चीज की कमी नहीं थी
पर हर चीज वह मेरे लिए ही लाए जा रहे थे
खुश तो मुझे होना चाहिए पापा
तुम जो मुझे मिले हो
पर मेरे जन्म से अब तक खुशी कोई और ही मनाए जा रहा था
वो थे मेरे पापा
ये दुनिया पैसों से चलती है
पर कोई सिर्फ मेरे लिए ही कमाए जा रहा था
घर में सब प्यार दिखाते हैं
पर कोई बिना दिखाए भी इतना प्यार किए जा रहा था
वो थे मेरे पापा
अपनी छोटी-छोटी सक्सेस पर
मैं कितना खुश था
पर कोई मुझसे भी ज्यादा खुश होकर चुपके चुपके खुशी के आंसू बहाए जा रहा था
वो थे मेरे पापा

अक्ष पंवार नवम ख

हिंदी भाषा



प्रकृति की पहली ध्वनि ओम है
मेरी हिंदी भाषा भी इसी ओम की देन है
देवनागरी लिपि है इसकी
देवों की कलम से उपजी
बंगला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई
हिंदी ही है इन सब की जननी

प्रकृति की हर एक चीज अपने में संपूर्ण है
मेरी हिंदी भाषा भी अपने में परिपूर्ण है
जो बोलते हैं वही लिखते हैं
मन के भाव सही उभरते हैं
हिंदी भाषा ही तुम्हें प्रकृति के समीप ले जाएगी
मन की शुद्धि तन की शुद्धि सहायक यह बन जाएगी
कुछ हवा चली है ऐसी ह कहते हैं
इस मातृ भाषा को बदल डालो
बदल सको क्या तुम अपनी माता को
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो
देशों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो
हर एक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो
हिंदी की जड़ों पर आओ हम गर्व करें
हिंदी भाषा पर आओ हम गर्व करें

वैभव राणा नवीं अ

जीवन एक युद्ध है आराम नहीं



जीवन को पूरी तरह जीना और उसका उद्देश्य जानना हर मनुष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। जीवन चलते रहने व आगे बढ़ते रहने का नाम है। जीवन में मनुष्य की सबसे बड़ी लड़ाई स्वयं से है। वह हर क्षण खुद से लड़ता रहता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य स्वयं से तत्पर होकर युद्ध करता रहता है। परंतु अगर वह सोचता है कि उसे मेहनत करनी चाहिए या नहीं, क्या उसे आगे बढ़ते रहना चाहिए या नहीं, या रुक जाना चाहिए। इसी उलझन से उसे लड़ना आना चाहिए, वरना वह पीछे रह जाता है। दुनिया से युद्ध तो वे जीत लेता है, परंतु अंतर्मन से युद्ध जीतना सबसे कठिन होता है। हम स्वयं के सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। अगर हम कोई भी युद्ध का कठिनाई का डटकर सामना कर सकते हैं, तो हम खुद को जीत और खुद पर काबू पा सकते हैं। किसी पर अपनी असफलता का आरोप सिर्फ कायर लोग जो आराम करते रहते हैं वही लगाते रहते हैं।

**जीवन एक युद्ध है स्वयं से और दुनिया से
इसे आराम करने में गंवाना नहीं चाहिए**

प्रांजल मक्कड़ कक्षा नवीं अ



उदय और अस्त दोनों को अर्घ्य & छठ पूजा

यह प्रकृति को पूजने का पर्व भी है। छठ पूजा हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है। सामान्यतः यह त्योहार बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में धूमधाम से मनाया जाता है। छठ भगवान सूर्य की उपासना का पर्व है। भारत में सूर्य पूजा की परंपरा वैदिक काल से ही आ रही है। उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने से चलने वाले इस पर्व का अपना ऐतिहासिक महत्व रहा है। इस व्रत का मुख्य उद्देश्य पति, पत्नी, पुत्र और पौत्र सहित सभी परिजनों के लिए मंगल कामना से भी जुड़ा हुआ है। यह व्रत भैया दूज के तीसरे दिन यानी शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से आरंभ होता है। व्रत के पहले दिल को नहाय & खाय कहते हैं जिसका शाब्दिक अर्थ है स्नान के बाद खाना। इस दिन पवित्र नदी में स्नान किया जाता है। छठ पूजा का संबंध हठयोग से भी है, जिसमें बिना भोजन ग्रहण किए हुए लगातार कई घंटों तक पानी में खड़ा रहना पड़ता है और भगवान सूर्य की उपासना करनी पड़ती है। इससे शरीर के अशुद्ध जीवाणु परास्त हो जाते हैं। सूर्यदेव और छठी मैया का संबंध भाई बहन का है, इसलिए छठ के मौके पर सूर्य की अराधना फलदायी मानी गई है। यह एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें न केवल उद्यमचल सूर्य की पूजा की जाती है बल्कि अस्ताचलगामी सूर्य की भी पूजा की जाती है। इस दिन व्रती स्नान कर अरवा चावल, चना दाल और कद्दू की सब्जी का भोजन ग्रहण करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि छठ पूजा के व्रत को जो व्यक्ति रखता है वह इन दिनों में जल तक ग्रहण नहीं करता है। इस व्रत को करने वाले के जीवन में सुख समृद्धि आती है और उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

ऐशनी शर्मा कक्षा नवीं अ

पुस्तकालय और पुस्तकों का महत्व



पुस्तकालय विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का घर है। यहां कहानियों व विभिन्न विषयों की पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में पुस्तकों को क्रम के अनुसार रखा जाता है। वैसे तो पुस्तकालयों में हमेशा चुप्पी रहती है परंतु मेरा तो यह मानना है कि जो पुस्तक के यहां घर बसा कर रहती है वे आपस में कुछ तो सांझा करती ही होगी। चाहे फिर ज्ञान ही क्यों न हो। आजकल यह पुस्तक के कुछ मौन ही रहने लगी है, क्योंकि आजकल बच्चे पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने नहीं, बल्कि बातें करने आते हैं। जब भी मैं पुस्तकालय जाती हूं, तो मुझे यह महसूस होता है कि यह मुझसे मानो कह रही है कि आप हमें पढ़ो। हम में छुपे ज्ञान का अध्ययन करो। पुस्तकें तो ज्ञान का भंडार होती हैं, परंतु आजकल कोई इन्हें पढ़ता नहीं है और उसका यह मुख्य कारण है कि आजकल टेक्नोलॉजी इतनी प्रगति कर चुकी है कि एक बटन दबाओ और सब हाजिर। मैं यह नहीं कह रही कि हमें टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, परंतु मेरा कहने का यह आशय है कि हमें उस पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। पुस्तकें हमारी सबसे पक्की दोस्त होती हैं। यह हमें और कुछ सिखाती है। पुस्तकों में न जाने कितने लेखकों ने अपनी कल्पनाएं सांझा की। किताबों को पढ़ने से हम न जाने कितना ज्ञान प्राप्त करते हैं परंतु अपनी कल्पना को भी साकार कर सकते हैं। अंत में मैं यही कहना चाहती हूं कि हमें जितना हो सके उतना पुस्तकें पुस्तकें पढ़नी चाहिए। जैसे कहा भी जाता है &

पुस्तकें ज्ञान का भंडार है

पत्रों में समाया संसार है

जो ना समझ पाए इसे

उसका जीवन निराधार है

शारन्या गुमरा

सातवीं ख

दोस्तों और परिवार की अहमियत



जिंदगी में बहुत उतार-चढ़ाव आते हैं पर जो लोग हमारे साथ हमेशा रहते हैं A चाहे जो भी हो जाए वह होता है हमारा परिवार और हमारे दोस्त A हमारा परिवार हमारे लिए कुछ भी चीज करने को तैयार होता है और वह दोस्त ही है जो हमारे बुरे वक्त में हमें हंसा हंसा के जो हुआ था सब भुला देता है A जब हम अकेले होते हैं और कोई हमारे साथ नहीं होता तो हमारे साथ में दोस्त लोग होते हैं, जो हमें दिलासा देते हैं, भरोसा देते हैं, बिना बुलाए हमारे घर आ जाते हैं, क्योंकि उन्हें उसी समय अपने आप पता चल जाता है A दोस्त ही वह व्यक्ति है जिसे हम कोई भी चीज बताने से कभी नहीं कतराते A दोस्त हमारे परिवार से कम नहीं होते हैं A हम अपने स्वयं परिवार से ज्यादा दोस्तों के साथ रहते हैं, पर एक परिवार वह है जो हर समय आपकी सहायता के लिए उपस्थित होते हैं A पूरे परिवार में कोई एक सदस्य ऐसा होता है जो हमारे सबसे अच्छे दोस्त से कम नहीं होता A वह होती है & हमारी माँ A माँ वह है जिसे हम अपनी सारी तकलीफें दुख दर्द आदि खुलकर बता सकते हैं A एक पिता वह है जो दिन रात मेहनत करके एक-एक पैसा कमाता है A एक बहन वह है जो हमारी पढ़ाई में हमेशा सहायता करती है A एक भाई वह है जो हमेशा हर खेल में हमारे साथ खेलने को तैयार हो जाता है और एक दोस्त वह जो हमारे परिवार से कम नहीं होता A

दीपशिखा नलवा

सातवीं ख

शिक्षक की भूमिका



शिक्षक हमारी जिंदगी का एक बहुत अमूल्य हिस्सा है A आज हम जो कुछ भी है उन्हीं के साथ और उनके दिए गए ज्ञान और शिष्टाचार की वजह से हैं A जैसे माता-पिता बच्चों को चलना सिखाते हैंA उसी प्रकार शिक्षक बच्चों को जिंदगी के अनगिनत पाठ सिखाते हैंA माना कभी कभार वह हमें गुस्सा करते हैं, परंतु वह हमारे भले के लिए ही होता है A उस समय हम मन ही मन उन्हें बुरा भला कहते हैं पर बाद में चलकर वही डॉट हमें बहुत कुछ सिखा कर चली जाती है और रह जाती है तो बस यादें A शिक्षकों की अहमियत हमें कभी समझ नहीं आती A हम सभी की बस यही धारणा होती है कि बस दसवीं तक इन शिक्षकों के साथ रहो और फिर उसके बाद तो आप कौन और हम कौन A परंतु शिक्षक जीवन का वह अंग होता है जिसके बिना विद्यार्थी जीवन का एक पत्ता भी नहीं हिलता A अतः हमें अपने शिक्षकों को वही दर्जा देना चाहिए जो हम अपने माता-पिता को देते हैं A

विवांशी अवस्थी

सातवीं ख

भारत

भारत है यह भारत, है सोने की चिड़िया



भारत है यह भारत जो रखे एकता में विश्वास
भारत है यह भारत, शूरवीरों की यह भूमि
भारत है यह भारत, जो रखे शांति में विश्वास
भारत है यह भारत, जो लड़े उनसे
जो समझते भारत को बस एक नाम

नमस्कार मैं अमिशी शर्मा आप सब का स्वागत करती हूँ अभी मैंने कुछ पंक्तियां अपने भारत के बारे में आपके सामने प्रस्तुत कींA मैं इन पंक्तियों से आपको बताना चाहती हूँ कि आप में से कुछ लोगों का सपना है कि वह अपना देश छोड़कर दूसरी जगह में जाएं A क्या वहाँ पर आपको हम जैसी संस्कृति, रीति & रिवाज मिलेंगेA उत्तर है नहीं A मेरा यह मतलब नहीं कि आप विदेश न जाओ, मैं आपको सिर्फ यह बताना चाहती हूँ कि कहीं भी जाओ पर भारत की संस्कृति व रीति-रिवाजों को मत भूलो A सम्मान करो उन शूरवीरों का जिन्होंने भारत देश के लिए अपने प्राण त्याग दिए A उन गलियों को न भूलो, जहाँ आप पले बढ़े A बचपन के उस दोस्त को मत भूलो जिसके साथ तुमने अपना पूरा बचपन बिताया A यह देश जहाँ आप जन्मे हैं यह मात्र एक देश नहीं यह आपकी मातृभूमि है जिस पर आपको नाज़ होना चाहिएA

अमिशी शर्मा पांचवी ब

हमारी कक्षा का कमरा



हमारी कक्षा का कमरा बहुत विशाल है A यह विद्यालय के प्रथम मंजिल पर एक कोने में है A इसमें एक दरवाजे खिड़कियाँ हैं A इनके द्वारा कमरे में बहुत हवा व रोशनी आती है A अतः हम सूर्य की रोशनी व ताज़ी हवा का आनंद लेते हैं A हमारी कक्षा का कमरा बहुत स्वच्छ है A इसमें लगभग 12 डेस्क हमेशा लगे रहते हैं A एक डेस्क पर तीन या चार विद्यार्थी बैठ सकते हैं A इस प्रकार इस कमरे में लगभग 44 विद्यार्थी बैठ सकते हैं A इसमें सभी डेस्क बहुत तरीके से लगे हुए हैं, जो सुंदर दिखाई देते हैं A इसकी दीवारों पर चार्ट व तस्वीरें टंगी हुई हैं, जिनसे कमरे की शोभा बढ़ी हुई है A इस कमरे में एक में एक कुर्सी अध्यापक के बैठने के लिए मौजूद रहती है जिस पर बैठकर अध्यापक कक्षा को पढ़ाते हैं तथा अपनी कक्षा का काम करते हैं A इसमें एक बड़ा श्यामपट्ट भी है जो सामने की दीवार पर में बना हुआ है, इसे अध्यापक पढ़ाते समय प्रयोग में लाते हैं। इस कमरे की छत पर दो पंखे लगे हैं A हम सब विद्यार्थी अपनी कक्षा के कमरे में शांत बैठे रहते हैं तथा अध्यापकों के आने पर अपना पाठ पढ़ते हैं A

अक्षिता सिंह पांचवीं ब

रिश्ते



अंकल आंटी भर में,
हर रिश्ते को मत निपटाओ A
रिश्ते को जानो समझो,
जो रिश्ता है उसी से बुलाओ A
यह रिश्ते ही पूंजी है,
इनकी मिठास का आनंद उठाओ A

दादी, मामी, मौसी, बुआ, जीजा, पापा, फूफा, मौसा,
सुनते ही स्पष्ट हो जाता, किससे हमारा क्या है नाता A

अपूर्वा शर्मा पांचवीं ब

खुदा और मां



ऐसा नहीं कि माँ को बनाकर खुदा ने जश्न मनाया,
बल्कि सच तो यह है कि वह बहुत पछताया A
कब उसका एक-एक जादू, किसी और ने चुरा लिया,
पहचान भी नहीं पाया A
खुदा का काम था मोहब्बत,
जो मां करने लगी A

खुदा का काम था बरकत,
वह भी मां करने लगी A
खुदा का काम था हिफाजत,
वह माँ करने लगी,
देखते ही देखते उसकी आंखों के सामने कोई और, परवरदिगार हो गया A
वह बहुत मायूस हुआ, बहुत पछताया,
क्योंकि मा को बनाकर, खुदा खुद बेरोजगार हो गया A

अनव शर्मा पांचवीं ख

माँ



सबसे सुंदर सबसे प्यारी
सबसे न्यारी मेरी माँ
मुझे गले लगा लेती है
माँ चेहरे के भाव को देखते ही
हर बात समझ जाती है माँ
हमको मिलता जीवन उनसे

भगवान का दूसरा रूप है माँ
रिश्तो को यह संजोकर रख दे
सारे दर्द खुद ही सह लेत
माँ तो सृष्टि का अस्तित्व है
इस धरती की पहचान है माँ
शब्द ऐसे वेदव्यास भी न तलाश पाए
जो चरित्र बयान कर पाए तेरा
माँ सबसे सुंदर सबसे प्यारी सबसे न्यारी है मेरी माँ

प्रभव ठाकुर पांचवीं ब

कोई अर्थ नहीं



नित जीवन के संघर्षों से,
जब टूट चूका हो अंतर मन।
तब सुख के मिले समंदर का, रह जाता कोई अर्थ नहीं।
जब फसल सूख कर जल के बिन, तिनका तिनका बन गिर जाये।

फिर होने वाली वर्षा का, रह जाता कोई अर्थ नहीं।
सम्बन्ध कोई भी हो लेकिन, यदि दुःख में साथ न दे अपना।
फिर सुख के उन संबंधों का, रह जाता कोई अर्थ नहीं।
छोटी छोटी खुशियों के क्षण, निकले जाते हैं रोज जहाँ।
फिर सुख की नित्य परीक्षा का, रह जाता कोई अर्थ नहीं।
मन कटु वाणी से आघात हो, भीतर तक छलनी हो जाये।
फिर बाद कहे प्रिय वचनो का, रह जाता कोई अर्थ नहीं।
सुख साधन चाहे जितने हों, पर काया रोगों का घर हो।
फिर उन अगनित सुविधाओं का, रह जाता कोई अर्थ नहीं।

सानवी ठाकुर कक्षा 4अ

शिक्षक



शिक्षक एक व्यक्ति के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। माँ किसी भी बच्चे की पहली शिक्षक होती है जो उसे चलना बोलना जैसी मूल भूत आवश्यकताएं सिखाती है। वे लोग सोभाग्यशाली होते हैं जिन्हें अच्छे शिक्षक मिलते हैं। किताबी ज्ञान के आलावा शिक्षक बच्चों को नैतिक ज्ञान भी देते हैं। शिक्षक बच्चों को उनके बचपन से ही नेतृत्व करते हैं और उन्हें काबिल बनाते हैं। एक शिक्षक भगवान की तरह होता है, क्योंकि भगवान के द्वारा ही पूरे संसार का निर्माण होता है। शिक्षक अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और देखभाल से विद्यार्थियों के पूरे जीवन को एक मजबूत आकार देता है। वह अपने सभी विद्यार्थी में कोई भी मत भेद किये बिना सबको निस्वार्थ ज्ञान देता है।

एपीजे अब्दुल कलाम जी का कहना था कि हमें अगर अपने देश को भ्रष्टाचार से बचाना है तो हमें तीन लोगों की आवश्यकता है-माता, पिता, शिक्षक। क्योंकि माता पिता हमें संस्कार प्रदान करते हैं और शिक्षक हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। हमें प्राप्त संस्कार और ज्ञान पे ही हमारा भविष्य का निर्माण निर्भर करता है।

हमें अपने शिक्षकों का सदैव आदर करना चाहिए। सही मायनों में शिक्षक का आदर तभी हो सकता है, जब हम उनके बताये मार्ग पर चलेंगे।

अनविता भारद्वाज कक्षा चौथी क

चुटकुले



अध्यापक & सुनाओ

संता -

अध्यापक & और सुनाओ A

संता & और सब बढ़िया। आप सुनाओ

अध्यापक & ताजमहल किसने बनाया?

संता & जी मेहता ने A

अध्यापक &- मेरा मतलब किसने बनवाया A

संता &- जी ठेकेदार ने A

अध्यापक &- नालायक कभी तुमने कोई बुक खोली है A

संता & हां रोज खोलता हूं मैं एक बुक A

अध्यापक & कौन सी

संता & फेसबुक A

रुद्रा ठाकुर 3 क

पर्यावरण बचे तो प्राण बचे



यह धरती है माँ हमारी,

रक्षा इसकी करनी है, जिम्मेवारी हमारी A

यह पेड़ पौधे हैं, जीवन हमारा,

इन्हें न काटो तुम,

एक काटो तो चार लगाओ तुम A

मानव तू पर्यावरण को दूषित करता जाएगा,

तो एक दिन इस धरती पर सांस नहीं ले पाएगा,

इसलिए कहता हूं आज,

कसम खा और पर्यावरण को स्वच्छ बना A

आओ हम पर्यावरण को हरा-भरा करें,

नहीं मिलेगा जीवन दोबारा,

प्रदूषण मुक्त हो पर्यावरण हमारा A

आदित्य शर्मा तीसरी अ

शिक्षक



शिक्षक न तो पेशा है, न ही व्यवसाय है
न ही घर चलाने वाली कोई आय हैA
शिक्षक सभी धर्मों से egku धर्म है A
गीता में लिखा है &
मां फलेषु वाला कर्म है A
शिक्षक एक प्रवाह है,

मंजिल नहीं रह हैA

शिक्षक पवित्र है,

महक फैलाने वाला इत्र है A

शिक्षक स्वयं जिज्ञासा है,

खुद कुआँ है, पर प्यासा है A

मैं डालता है चांद सितारों तक को तुम्हारी झोली में,

वह बोलता है बिल्कुल हमारी बोली में A

वह कभी मित्र, कभी मां, तो कभी पिता का हाथ है,

साथ में न रहते हुए भी, ताउम्र का साथ हैA

वह कभी नायक, तो कभी खलनायक बन जाता है,

हमारे लिए न जाने कितने मुखोटे लगाता हैA

इतने मुखोटों के बाद भी वह समभाव है,

क्योंकि यही तो उसका स्वभाव हैA

शिक्षक कबीर के गोविंद सा बहुत ऊंचा है,

कहो भला कौन उस तक पहुंचा है A

वह न तो दीपक है, न बाती है,

वह तो तेल है,

क्योंकि उसी पर दीपक का सारा खेल है

उसी पर दीपक का सारा खेल हैA

भानवी ठाकुर 2ब

पर्यावरण



हमारे चारों ओर का गिरा हुआ आवरण पर्यावरण कहलाता है A

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता हैA

हमारे चारों ओर उपस्थित सभी चीजें जैसे हवा, पानी, जीव&जंतु एवं पेड़ पौधे सभी

पर्यावरण का निर्माण करते हैंA

हमारी आंखें पर्यावरण में जितनी भी चीजों को देखती है वह सभी पर्यावरण का ही हिस्सा हैA

अदिति ठाकुर कक्षा 2 ब

मेरी प्रिय अध्यापिका



घर छोड़कर शुरू शुरू में,
जब स्कूल चला आता था A
माँ को याद कर करके,
मैं बहुत आंसू बहाता था A
फिर प्यारी अध्यापिका ने,
प्यार से मुझको समझाया A

मैं भी तो माँ जैसी हूँ,
कह कर मुझको सहलाया A
अपनी प्यारी शिक्षिका को,
धन्यवाद चाहता हूँ कहना
आप हमेशा नन्हे-मुन्नों के संग,
बस ऐसे ही रहना A

मयंक शर्मा प्रथम क

अध्यापकों का कोना

मैं और मेरे दोस्त



जिंदगी रंगीन इनसे है जिंदगी हसीन इनसे है
मेरा आसमान इनसे है मेरी जमीन इनसे है।।
मुझे खुद से मिलाते हैं मेरे दोस्त।
दिन-रात साथ निभाते हैं मेरे दोस्त।।
सुख में महफिल जमाते हैं मेरे दोस्त।
दुख में बिन बुलाए आते हैं मेरे दोस्त।।

भटकता कभी राह, तो डगर दिखाते हैं मेरे दोस्त।
थक गया कभी हार के, तो जिंदगी का सबक सिखाते हैं मेरे दोस्त।।
मेरी जिंदगी का सार, दोस्तों का प्यार।
यही मेरी कहानी है, यूँ ही दोस्ती निभानी है।।
मेरे दोस्त मेरी जान है, मेरा गुमान है, मेरी पहचान है।।

कुमार दिनेश गुप्ता, गणित शिक्षक

एक शिक्षक - कल से आज तक का सफर



चला गया वह जमाना
जब हाथ में छड़ी व चेहरे पर गुस्सा
बैग में किताबें आंखों में रौब
यही शिक्षक की पहचान थी
आज जमाना है दोस्ताना व्यवहार का
जहां मन में सहनशीलता

व्यवहार में पवित्रता
भविष्य बदलने की चाह
आंखों में आत्मविश्वास व ज्ञान अथाह
हर विद्यार्थी के मन में भरती जीवन आशा
यही है आधुनिक समय में शिक्षक की परिभाषा
चला गया वह जमाना
जब छात्र अध्यापकों से बात करने से कतराते थे आज के समय में छात्र
राह चलते हाथ करके निकल जाते हैं
कभी सोचती हूं क्या यह विकास है
जहां छात्रों के व्यवहार से होता अध्यापक निराश है
फिर सोचती हूं कि यह बस परिवर्तन है
वह समय गलत नहीं था
जब छात्र चुप रहते थे लिहाज से
लेकिन यह भी सही कहां तक है
जब आजादी आंशिक रूप से
अशिष्टता में बदल जाती है
लेकिन बढ़ना है हमें फिर भी आगे
बस मन में यह बात लिए कि
"परिवर्तन प्रकृति का नियम है"

बिमला देवी, हिंदी अध्यापिका

मौसी & माँ का दूसरा रूप



मौसी का रिश्ता एक बहुत ही प्यारा रिश्ता है
मौसी वह होती है जो कभी माँ की भूमिका निभाती है
तो कभी माँ सी बन जाती है
मौसी के रहते मां को अपने बच्चे की फिक्र नहीं रहती
दिल से मानती है उनको अपने बच्चे मुख से भले ही न कहती
अपने और बहन के बच्चों में कोई भेदभाव नहीं करती
उनकी खुशी का खयाल अपने बच्चों से ज्यादा ही रखती

गलती करने पर डांटती और फिर खुद ही मनाती

रोते यदि वो तो खुद भी रो जाती

अच्छी राह दिखाती हमेशा पकड़े उनका हाथ

ऐसा रिश्ता होता है मौसी का अपनी बहन के बच्चों के साथ

बिमला कारवालो

हिंदी अध्यापिका